गोलोक वृन्दावन में विराजमान श्रीकृष्ण अपनी सर्वव्यापकता के बल पर प्राकृत और अप्राकृत, दोनों ब्रह्माण्डों का त्रुटिरहित पूर्ण संचालन करते हैं।

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ।।२३।।

यत्र=जिस; **काले**=काल (मार्ग) में; **तु**=किन्तु; **अनावृत्तिम्**=पीछे न आने वाली गति को; **आवृत्तिम्**=पीछे आने वाली गति को; **च**=तथा; **एव**=निःसन्देह; **योगिनः**=योगी; **प्रयाताः**=शरीर त्याग कर जाने वाले; **यान्ति**=प्राप्त होते हैं; **तम्**=उस; **कालम्**=काल को; **वक्ष्यामि**=कहूँगा; **भरतर्षभ**=हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन।

अनुवाद

हे भारत! अब मैं तेरे लिए उन दोनों कालों का वर्णन करूँगा जिनमें से एक में तो संसार से प्रयाण करने पर संसार में फिर आना होता है और दूसरे में जाने पर संसार में फ़िर जन्म नहीं होता।।२३।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् के पूर्ण शरणागत अनन्यभक्तों को यह चिन्ता नहीं सताती कि उनका देह-त्याग किस समय होगा अथवा किस प्रकार से होगा। वे सब कुछ श्रीकृष्ण की इच्छा पर छोड़ देते हैं और इस प्रकार सुखपूर्वक भगवद्धाम को प्राप्त हो जाते हैं। परन्तु जो अनन्य भक्त नहीं हैं, जो कर्मयोग, ज्ञानयोग, हठयोग आदि अन्य साधनों पर निर्भर हैं, उनके लिए आवश्यक है कि किसी उपयुक्त काल में देहत्याग करें, जिससे उन्हें यह निश्चय रहे कि जन्म-मृत्युमय संसार में उन्हें फिर नहीं आना पड़ेगा।

सिद्ध योगी इच्छा के अनुसार संसार से जाने के देश-काल को चुन सकता है। परन्तु जो सिद्ध नहीं हुआ है, उसे प्रकृति के इच्छानुसार देह-त्याग करना होगा। श्रीभगवान् ने इस प्रकरण में उस काल का वर्णन किया है, जो आवागमन से मुक्ति के लिए सब से उपयुक्त है। आचार्य बलदेव विद्याभूषण के अनुसार यहाँ प्रयुक्त **काल** शब्द कालाभिमानी देवता का वाचक है।

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।।२४।।

अग्निः=अग्नि का अभिमानी देवता; **ज्योतिः**=प्रकाशमय; **अहः**=दिन का अभिमानी देवता; **शुक्लः**=शुक्लपक्ष का अभिमानी देवता; **षट्-मासाः उत्तरायणम्**=उत्तरायण के छः मासों का अमिनी देवता; **तत्र**=उस मार्ग में; **प्रयाताः**=जो देह को त्याग कर प्रयाण करते हैं; **गच्छन्ति**=प्राप्त होते हैं; **ब्रह्म**=ब्रह्म को; **ब्रह्मविदः**=ब्रह्मवेत्ता; **जनाः**=पुरुष।

अनुवाद

जिस मार्ग में ज्योतिर्मय अग्नि का अभिमानी देवता है, दिन का अभिमानी देवता है, शुक्लपक्ष का अभिमानी देवता है और उत्तरायण का अभिमानी देवता है, उस